दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL10**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): बिक्रम गंगवार

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 18/10/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	4	2	3	8	3	2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तम

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 137 टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, विरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की संतकाव्यधारा के शीर्ष कवि 'कबीरदास' द्वारा रचित 'बीजक' नामक ग्रंथ से ली गई हैं। इसमें विरह को संपादित किया गया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि विरह वास्तव में सुल्तान या राजा के समान है इसे भला कौन बुरा कह सकता है वास्तव में विरह की तड़प से ही हमारे अंदर निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति हेतु बेचैनी पैदा होती है। जिन लोगों के हृदय में विरह का संचार नहीं होता है वास्तव में वह हृदय सदा एक समान रहते हैं।

विशेष -

— विरह का महिमा मंडन किया गया है - हिंदी साहित्य में जायसी का नागमती विरह, सूर की गोपियों का विरह भी काफी चित्रित हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- विरह जैसे भावों को बुनियाद बताना - मानवीकरण की व्यंजना है।
- भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी है।
- आज के संदर्भ में भी देखे तो पता चलता है कि आध्यात्मिक शांति हेतु विरह का महत्व है ही।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

संदर्भ एवं प्रसंग - बिहारी लाल रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में समादृत हैं प्रस्तुत पद्य उनकी रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

इसमें बताया गया है कि श्रृंगार, रस, रागों में ही डूबे रहना परम सुख है।

व्याख्या - बिहारी कहते हैं कि जीवन का उद्देश्य तो परम सुखों की प्राप्ति में है इसलिए तंत्री की ध्वनि, कविताओं के रस एवं प्रेम में डूबे रहना चाहिए इसमें जो नही डूबा वह डूब गया जिन्होंने अपने सभी अंगों को उसमें डुबो दिया वह पार हो गया।

विशेष -

- यह पंक्तियाँ रीतिकाल की मानसिकता को व्यक्त कर रही है कि परम आनंद तो श्रृंगार, प्रेम में ही है।
- प्रेम एवं श्रृंगार के अतिरिक्त अन्य ललित कलाओं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के साथ श्रृंगार भी मिलता है।

- वास्तव में यह श्रृंगार दरबारी मानसिकता से उत्पन्न हुआ जो इस काल की महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

- भाषा - ब्रज है जो अपनी लोचशीलता, संगीतात्मकता एवं गेयता के लिए प्रसिद्ध है।

- रूप विधान की छटा देखते ही बनती है साथ ही दोहा छंद है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश सूफी काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' की रचना 'पद्मावत' से लिया गया है। इन पंक्तियों में नागमती की विरह वेदना को व्यक्त किया गया है। राजा रत्नसेन की अनुपस्थिति में जो नागमती को विरह वेदना हो रही है उसकी ही बात यहाँ बतायी जा रही है।

व्याख्या - रानी नागमती कहती है कि भादों का महीना आ गया है उसे विरह के कारण भारी प्रतीत हो रहा है अंधेरी रातों में डर और भी बढ़ जाता है हमारा प्रिय तो दूसरी जगह है तथा यह बिस्तर नागों की भाँति डस रहा है मैं यहाँ अकेली हूँ यहाँ पर बिजली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

चमक रही है बादल गरज रहे हैं इसमें वियोग और भी बढ़ जाता है नैनों से निरन्तर आंसू निकल रहे हैं जब यह दुखना ढना लग गयी तो पूरी पृथ्वी भी जलने लगी है।

विशेष -

- नागमती का विरह - बारहमासा वर्णन द्वारा बताया गया है। - अद्वितीय वर्णन।
- प्रकृति यहाँ पर सहज रूप में व्यक्ति के साथ सम्बद्ध है।
- भाषा की दृष्टि से अवधी का प्रयोग किया है।
- नागमती का विरह वर्णन एक साधारण स्त्री का विरह है। - साधारणीकरण।
- दृश्य बिम्ब तथा श्रव्य बिम्ब की दृष्टि से अद्भुत प्रयोग।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुजें।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ सगुणकाव्यधारा की कृष्णभक्ति शाखा के भक्त कवि 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीतसार' से ली गई हैं। इनमें गोपियाँ प्रकृति के साथ अपने वियोग का व्याख्यापित कर रही हैं।

व्याख्या - गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण के बिना यह कुंजे, जंगल सब दुश्मन हो गये हैं जब गोपाल यहाँ उपस्थित थे तब यह शीतलता प्रदान करती थी आज तो यहाँ ये विषम ज्वालायें हो रही है। कृष्ण के अभाव में यह जमुना का बहना, पक्षियों का बोलना, कमलों का खिलना, भौंरों का गुंजायमान होना सब व्यर्थ ही है। पवन, पानी सब दुश्मन प्रतीत हो रहे हैं अंत में गोपियाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तरह से सूरदास कहते हैं कि माधव से जाकर अरज करना कि आपकी प्रतीक्षा के मार्ग को देखो - देखते आँखें दुखने लगी हैं।

विशेष -

- प्रकृति वास्तव में वैसी ही प्रतीत होती है जैसा व्यक्ति का हृदय या मन होता है।
- साहित्य में प्रकृति का ऐसा समायोजन छायावादी कवियों के यहाँ भी दिखता है।
- ये पद - गेयपद है जिसमें पर्याप्त लोकशीलता विद्यमान है।
- ब्रजभाषा का सुंदर रूप देखते ही बनता है।
- शृंगार की दृष्टि से वियोग शृंगार की उत्कृष्ट विवेचना की गई है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश भक्तिकालीन कवि, रामभक्ति के शिरोमणि 'तुलसीदास' के 'कवितावली' नामक ग्रंथ से लिया गया है।

इसमें तुलसीदास भगवान राम की महिमा का वर्णन कर रहे है कि सब कुछ उन्हीं के हाथ में है।

व्याख्या - तुलसी दास जी कहते हैं कि मनुष्य की जाति-पाति क्या है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता और वह क्या काम करता है इसका भी बहुत महत्व नहीं है क्योंकि लोक एवं परलोक दोनों ही (तुलसी) भगवान के हाथ में है वह कहते हैं उन्हें अपने प्रभु राम के नाम बड़ा भारी विश्वास है। ज्यादा अपनी हांकते लोगों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को कोई नहीं पूछता है। साधु हो या असाधु सभी में कोई अंतर प्रभु नहीं करते है इसलिए मुझे किसी अन्य के द्वार पर भटकने से क्या लाभ मैं जो कुछ हूँ वह राम जी की कृपा है।

विशेष -

- तुलसीदास जी ने इन पंक्तियों में ईश्वर के रूप में श्रीरामचंद्र के महत्व की स्थापना की है - सगुण रूप की।
- कवितावली की भाषा - ब्रज है जबकि तुलसीदास मूलतः अवधी के विद्वान कहे जाते है।
- 'गोत गोत' में पुनरुक्ति हुई है।
- जाति-पाति का महत्व कुछ नहीं होता - आज इस कथन की प्रासंगिकता अधिक है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद के प्रेममूलक, साधनामूलक एवं अभिव्यक्तिमूलक रूप पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर का व्यक्तित्व जैसे बहुआयामी है उसी प्रकार उनका कृतित्व भी, भक्ति भी बहुआयामी है। उनके काव्य में रहस्यवाद के सभी रूप दिखायी पड़ते हैं + साधनात्मक एवं भावनात्मक दोनों ही।

कबीर का पालन पोषण नाथ परम्परा में था इसलिए इन्हें विरासत के रूप में साधनात्मक रहस्यवाद मिला। प्रारंभ में कबीर इस मार्ग पर ही चले जिससे साधनामूलक रहस्यवाद उनके काव्य में दिखता है –

"अवधू गगनमंडल घर कीजै
अमृत झरै सदा सुख उपजै
बंकनालि रस पीजै।"

परन्तु कबीर चूँकि भक्त है इसलिए यह मार्ग उनके मन को भाता नहीं है और वह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस पर तीव्र व्यंग्य करते हैं –

"गगना पवना दोनों बिनसै
कहाँ गया जोग तुम्हारा।"

इसके बाद वह सूफियों के प्रभाव के कारण अपनी अंतश्चेतना से भावनात्मक रहस्यवाद से जुड़ते हैं जो कि प्रेम आधारित है –

"नैनों की कर कोठरी पुतली पलक बिछाय"

इस प्रेममूलक रहस्यवाद की बहुत ही सुंदर अभिव्यंजनाएं उनके काव्य में दिखती हैं जब वह कहते हैं –

"तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया
तलफ – तलफ के भोर किया।"

इसी के साथ कबीर सोते ही मर्मों की बड़ी सुंदर अभिव्यक्तियां करते हैं और प्रेम में चरम सुख का अनुभव करते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर का काव्य वैविध्य से परिपूर्ण है तथा जिसका एक रूप रहस्यवाद के विविध रूपों में भी दृष्टिगोचर होता है जो कबीर को श्रेष्ठ भक्तों, संतो एवं प्रेमियों की श्रेणी में समादृत करता है।

10/20

अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद को भी स्पष्ट करें। मॉडल उत्तर देखें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरदास की साहित्यिक निपुणता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास कृष्णभक्ति काव्यधारा के शिखर पुरुष हैं उनका साहित्य श्रृंगार, प्रेम, वात्सल्य की दृष्टि से परिपूर्ण है। श्रृंगार एवं वात्सल्य के तो वह सम्राट हैं।

सूर की प्रसिद्धि का कारण केवल यही नहीं रहा है कि उन्होंने कृष्ण प्रेम, भक्ति, गोचारण परम्परा, गोपियों की स्वतंत्रता, राजनीति जैसे विषयों की स्थापना की है अपितु उनकी प्रसिद्धि साहित्यिक निपुणता के कारण भी है।

इस दृष्टि से देखने पर गुणात्मक एवं भावात्मक दोनों दृष्टियों से वह भारी पड़ते हैं। उनका काव्य रूप भले मुक्तक के रूप में हो परन्तु श्री कृष्ण के मिथक से जुड़े होने के कारण एक कथा का आभास होता रहता है इसी पर 'गेयपद' हैं -

'सूर सगुण लीलापद गावै'

भाषा की दृष्टि से उन्होंने ब्रजभाषा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैं जिस मिठास को भरा है वह आगे आने वाले कवियों के लिए बड़ी सरल एवं सोल्लशील हो गई थी।

वक्रोक्ति की दृष्टि से 'भाव प्रेरित वक्रता' की तारीफ तो स्वयं आचार्य शुक्ल ने की है क्योंकि गोपियाँ - उद्धव संवाद, उपालंभ आदि में यह वाग्विदग्धता दिखायी पड़ती है —

" उर में माखन चोर गड़े
अब कैसेहु निकसत नाहीं तिरछे हुए जो अड़े।"

बिम्बों की दृष्टि से सूरदास का काव्य एक चलचित्र की भाँति प्रतीत होता है इसमें मातृहृदय, बाल चंचलता, प्रकृति सभी के बिम्ब है —

" मैया कबहुँ बढ़ैगी चोटी
कितो बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।"

गुण की दृष्टि से माधुर्य गुण से ओतप्रोत पद हैं इनके। अलंकारों की दृष्टि से शब्दा एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थालंकार दोनों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है –

"निरखति अंक स्याम सुंदर के बार-बार लावति छाती
लोचन जल कागद मसि मिलिकै हो गयी स्याम स्याम की पाती।" (यमक)

इस प्रकार सूरदास का काव्य शिल्प की दृष्टि से भी परिपूर्णता से ओत-प्रोत है।

Good 8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर एवं तुलसी दोनों भक्तिकालीन कवि हैं कबीर जहां निर्गुण राम के उपासक हैं तो वहीं तुलसी सगुण राम के। दोनों ही अपने - अपने क्षेत्र में ~~नायक हैं~~। महान हैं तथा काव्य वैविध्य की दृष्टि से भी दोनों का काव्य परिपूर्ण है।

कबीर पर विचार करें तो सामाजिक संवेदनाओं, सामंती समाज पर चोट, धार्मिक आडम्बरों पर चोट, व्यंग्य, भाषा की सहजता ~~आदि~~, प्रेम, भक्ति आदि गुण उनके काव्य में भरे पड़े हैं एक उदाहरण -

"जो तू बाम्हन बाम्हनी का जाया
आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया।"

इसी प्रकार जब कबीर मुल्लाओं, ~~पर~~ आभिजात्यवादियों पर चोट करते हैं तो वह निर्भीकता बोल होते हैं।

दूसरी तरफ ~~काव्य~~ तुलसी के काव्य पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विचार करते हैं तो यह समाज, आर्थिक, राजनीति भक्ति, रामराज्य, भाषा का मर्यादावाद आदि दृष्टियों से ओत-प्रोत नजर आता है एक उदाहरण -

'परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई'

इसी प्रकार रामचरितमानस जैसा महाकाव्य की रचना एवं समन्वयचेतना की प्रबलता के कारण तुलसी लोकनायक का दर्जा प्राप्त करते नजर आते हैं।

वस्तुत: दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र के बादशाह हैं एक तरफ कबीर यदि अपनी समाजिक समस्याओं पर चोट के कारण लोकनायक नजर आते हैं तो दूसरी तरफ तुलसी भी कम नहीं।

अत: इसका उत्तर यही हो सकता है कि प्रयोगशीलता, सामाजिक चेतना, प्रेममूलक भक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की दृष्टि से भक्त कवि लोकनायक हैं जबकि प्रबंधात्मकता, समन्वयशीलता आदि की दृष्टि से तुलसी लोकनायक सिद्ध होते हैं।

8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' कविता अज्ञेय की प्रतिनिधि कविता है जो जापान में प्रचलित एक लोककथा को अपना आधार बनाती है।

अस्तित्ववाद एवं जेन बौद्धमत का प्रभाव अज्ञेय पर रहा है। अस्तित्ववाद मानव को सर्वाधिक महत्व देते हुए उसे प्रामाणिक या स्वधर्म के अनुसार जीने की प्रेरणा देता है वहीं जेन बुद्धिज्म में शान्ति को आंतरिक शक्ति के रूप में व्यक्त किया जाता है दोनों का ही प्रभाव असाध्यवीणा पर दिखता है।

असाध्यवीणा में वीणा को साधने के लिए प्रियंवद जब आते हैं और वीणा को साधना प्रारम्भ करते हैं तो वास्तव में वह अपने को ही शोध रहे होते हैं - 'वहीं स्वयं अपने को शोध रहा था' से यही बात व्यक्त होती है। यह जेन बुद्धिज्म का स्पष्ट प्रभाव है।

साथ ही यह वीणा साधने का कार्य आत्मनिवेदन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के भाव से किया गया है जहाँ अहं या व्यक्तित्व का विलयन होना आवश्यक है।

जब वीणा 'सहसा वीणा झनझना उठी' तो सभी पर उसका प्रभाव अलग-अलग पड़ता है -

'राधा ने अलग सुना
रानी ने अलग सुना।'

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति 'द्वीप सा एकाकी सा अलग-अलग एकाकी तार लिए' जो अपनी अन्तर्शीलता के अनुरूप ही प्रभाव पड़ा। जिसका जैसा स्वधर्म है उसी के अनुकूल - प्रजा के लिए, नारी के लिए उसी के लिए अलग ही महत्व था।

अस्तित्ववादी चिंतन मानता ही है कि व्यक्ति को यदि अपने निर्णय की स्वतंत्रता हो तो वह स्वयं प्रामाणिक जीवन जी सकता है यही बात असाध्यवीणा के माध्यम से व्यक्त की गई है कि यदि व्यक्ति स्वधर्म अनुसार जिये तो कोई समस्या नहीं हो सकती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार अनात्मवादिता पर अस्तित्ववाद एवं जैन बौद्धमत का प्रभाव देखा सकता है वास्तव में यह एक संश्लिष्ट कविता है जिसकी संवेदना का निचोड़ अरोमा बिंदुओं से टकराकर ही हो सकता है।

श्रेष्ठ है।

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम की शक्तिपूजा पौराणिक आख्यान के ढांचे की कविता है। जिसमें प्रतीकों का प्रयोग इतनी सटीक तरह से किया गया है जो कई संवेदनाओं को जन्म देता है।

शक्तिपूजा में द्वंद्वात्मकता की उपस्थिति लगातार बनी रही है जिसके कारण यह एक नाटकीय संरचना तक प्रतीत होती है। इसे हम कई बिंदुओं पर देख सकते हैं।

'रवि हुआ अस्त' से कविता की शुरुआत शक्तिहीनता से शुरु होती है परन्तु बीच में हनुमान की उपस्थिति शक्ति चेतना को जगाती है। जब राम ~~है अमानिशा~~

'है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार'

ऐसी निराशा में डूबे राम को जैसे 'नयनों का नयनों से गोपन प्रिय' संभाषण' याद आता है तो वह विरह वियोग भावना से भर जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पुन: अन्य द्वन्द्व की संरचना होती है उन्हें 'रावण का अट्टाहास' सुनाई देता है और 'मुस्कानता' दिखे लगते हैं।

दूसरा द्वन्द्व तो 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' का है इसके लिए जाम्बवान की ओर से 'शक्ति की मौलिक कल्पना' का सुझाव आता है। पुनः रामजब शक्ति आराधना शुरु करते हैं तो अंतिम बिंदु पर 'फूल' का गायब हो जाना, राम का अपनी आँख को अर्पित करना ऐसे मोड़ 'देवी का त्वरित उदय' होना पूरी की पूरी द्वन्द्वात्मक कहानी है।

उपर्युक्त विवेचन में हम देखते हैं कि हर घटना के बाद आकस्मिकता का भाव होना इसे द्वन्द्वात्मक बनाता है वास्तव में यह द्वन्द्व आशा और निराशा का, सत - असत का, प्रकाश एवं अंधकार का निराला के आत्म संघर्ष का तथा देश के राष्ट्रनायक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का है।

शिल्प की दृष्टि से भी भाषा, आकस्मिकता, संवाद, उदात्त प्रवाही रचना आदि की दृष्टि से द्वन्द्वात्मकता का सृजन होता है।

इस प्रकार राम की शक्तिपूजा में यह द्वन्द्व विभिन्न स्तरों पर समायोजित हुआ है जो इसकी अपनी अलग विशेषता है।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

पद्मावत मलिक मुहम्मद जायसी की काव्यमयी रचना है। इसके अन्योक्ति एवं समासोक्ति होने के प्रश्न को लेकर लगातार विवाद बना रहा है।

अन्योक्ति वहाँ होती है जहां पर प्रस्तुत अर्थ की तुलना में अप्रस्तुत अर्थ का महत्व ज्यादा होता है जबकि समासोक्ति में प्रस्तुत अर्थ का महत्व अप्रस्तुत अर्थ से ज्यादा होता है तथा अप्रस्तुत अर्थ भी बना रहता है।

पद्मावत में अगर देखें तो प्रस्तुत कथा - राजा रत्नसेन, नागमती, पद्मावती, गोरा बादल, राघव चेतन, हीरामन, अलाउद्दीन तथा देवपाल की कथा ही ज्यादा महत्वपूर्ण है जबकि अप्रस्तुत कथा रचना के पहले अंश में तो है परन्तु बाद के भाग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर इसे लागू कर पाना मुश्किल हो जाता है। सिंहलद्वीप के वर्णन में तो यह योग पद्मिनी का रहस्यवाद से जुड़ती है अन्य खंडो में नही।

रचना के अन्योक्ति होने के लिए जरूरी था कि ये (अप्रस्तुत) कथा शुरु से अंत तक चलती तथा प्रभाव भी डालती परन्तु ऐसा नहीं हो सका अतः पद्मावत अन्योक्ति नही है।

समासोक्ति में प्रस्तुत अर्थ तो है ही परन्तु अप्रस्तुत अर्थ भी उपस्थित है लेकिन यह इतना महत्वपूर्ण नही कि इसे समासोक्ति कहा जाये।

वास्तव में पद्मावत एक 'प्रकृत काव्य' है जिसमें प्रस्तुत कथा ही महत्वपूर्ण होती है बस अप्रस्तुत कथा अपनी उपस्थिति दर्ज करा जाती है।

लेकिन अगर समासोक्ति एवं अन्योक्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में से ही चयन करता हो तो यह स्थापत्य के अधिक नजदीक है।

8/15

ठीक है।

प्रमुख आलोचकों के मतों का भी उल्लेख करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ महान उपन्यासकार 'प्रेमचंद' के कालजयी उपन्यास 'गोदान' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में होरी जब अपने भाई हीरा से मिल जाता है तो बहुत खुश होता है उसी की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या - होरी अपने छोटे भाई हीरा से मिलने पर अतिप्रसन्न है अब भला कौन कह सकता है कि उसकी जीवन संघर्षों में हार हुई है यह मिलन के क्षण या गर्व की भावना कोई हार के लक्षण तो नहीं होते हैं। वह तो वास्तव में छोटी-छोटी खुशियों पर प्रफुल्लित हो जाने वाला है आज उसका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question. number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

विशेष -

- सामान्य कृषक की मनोदशा विशेषकर उनकी संयुक्त परिवार में आस्था को व्यक्त किया गया है।
- कृषक समाज अपनी आर्थिक विपत्तियों के बावजूद सामाजिक मूल्यों को कैसा संजोये रखा है इसे व्यक्त किया गया है।
- भाषा सरल, सहज खड़ी बोली है जो कि हिन्दुस्तानी कही जाती है।
- आज भी गाँव समाज में भाई भाई लड़ रहे हैं तो यह कथन उनमें उमंग पैदा कर सकता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार 'फणीश्वरनाथ रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में डा० प्रशांत विदापत नृत्य को देखकर सोच रहा है।

व्याख्या - डा० प्रशांत ने जब मेरीगंज गाँव में लोक संस्कृति की अद्भुत दृश्य देखी तो वह सोचता है कि कवि दिनकर जो अक्सर प्रश्न उठाते थे कि कवि विद्यापति के गान कहाँ? अर्थात क्यों आज तक उनके गीत इतनी तन्मयता से गाये जाते है तो आज उनका जवाब मिला है कि विद्यापति की कविता इन गरीब, अनपढ़, गंवार लोगों के बीच की कविता है वह तो इनकी झोपड़ियों में मधुर रस बरसा रही है भला ऐसा गान कब बंद हो सकता है?

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष -

- विद्यापति की चर्चा की गई है कि वास्तव में उन्हें 'मैथिल कोकिल' का दर्जा क्यों दिया जाता है।
- मेरीगंज एक उत्सवधर्मी गाँव है जहाँ बात-बात पर उत्सव होते रहते हैं + विद्यापत नृत्य।
- इन पंक्तियों की भाषा यद्यपि शुद्ध है क्योंकि ये डा॰ प्रशांत की सोच है। वैसे उपन्यास की भाषा देशज ही है।
- विद्यापति का लोक-संस्कृति से जुड़ाव ही उन्हें महान कवि बनाता है।

6/10

6M

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश शीर्ष नाटककार जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नामक नाटक से लिया गया है जिसमें जयमाला विजया को संबोधित करती हुई कहती है - .

व्याख्या - वह कहती है युद्ध भी तो एक गान ही है क्योंकि युद्ध में जो अस्त्र शस्त्रों की लड़ाई होती है उससे एक संगीत का ही सृजन तो होता है। केवल युद्ध के तर्कों में ही तो गान नहीं होता है अपितु ध्वंसमय प्रकृति का भी निरंतर संगीत होता है।

विशेष -

- तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है - संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग।
- प्रकृति की विध्वंसकारी ~~प्रकृति~~ स्थिति में भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक संगीत का सृजन होता है।

— यह पंक्तियाँ ओज गुण से सम्पन्न है इसमें वीरता का भाव है।

— नृत्य, संगीत, शंखनाद से पता चलता है कि लेखक इन शब्दों का सटीक प्रयोग कर अपने भावों का प्रवाह बनाये रखना चाहता है।

इन पंक्तियों के आधार पर प्रसाद की दृष्टि (अहिंसावादी आंदोलन के प्रति) को भी स्पष्ट करें

5 1/2 / 15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां आधुनिक युग के नाटककार मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एकदिन' से ली गई हैं। इनमें प्रियंगुमंजरी इस बात की पुष्टि कर रही है कि जब कालिदास ग्राम-प्रान्तर के बारे में सोचते हैं तो कैसे राजनीति से विमुख होने लगते हैं।

व्याख्या - प्रियंगुमंजरी, (कालिदास की पत्नी) कहती है कि राजनीति व साहित्य में काफी अन्तर होता है क्योंकि राजनीति किस करवट बदल जाये कोई नहीं जानता यदि इसमें जरा भी लापरवाही की तो सत्ता तुरन्त हाथ से जा सकती है इसलिए राजनीतिक जीवन में अपने को सही स्थिति में रखने के लिए बहुत जागरुक रहना पड़ता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष -

- 'राजनीति साहित्य नहीं है' - इसमें व्यंग्य शैली का प्रयोग हुआ है।
- भाषा तत्सम प्रवृत्ति की है ये भाषा तत्कालीन समाज के वातावरण निर्माण में सहायक है।
- राजनीति कैसे, कब बदल जाये इसकी अनिश्चयात्मकता को व्यक्त किया गया है।
- आज भी राजनीति में प्रत्येक समय सतर्क रहने की आवश्यकता रहती है क्योंकि पक्ष हो या विपक्ष अपना प्रभाव बनाये रखना चाहता ही है।

और गहराई लायें मॉडल उत्तर देखें।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

'आषाढ़ का एकदिन' मोहन राकेश का पहला नाटक है। नाटक एवं रंगमंच के संबंध को लेकर विद्वानों में भिन्न-भिन्न मत रहे हैं कुछ विद्वान मानते हैं कि नाटक के अनुरूप रंगमंच हो तो कुछ रंगमंच के अनुसार नाटक की मांग करते हैं।

मोहन राकेश वस्तुत: नाटक की पूर्ण उपलब्धता उसके मंचन में ही मानते थे इसलिए इस नाटक में उन्होंने पर्याप्त रंग संकेत दिये हैं उन्होंने इसमें दृश्य योजना, ध्वनि योजना, रंग संकेत, संवाद योजना का काफी ध्यान रखा है। इस तीन अंकों के नाटक में एक ही दृश्य है तो इसे बनाना आसान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस नाटक के माध्यम से वह मानव तत्व एवं शब्द तत्व के आधार पर मौलिक रंगमंच स्थापित कर रहे थे।

मानव तत्व का अर्थ पात्रों की योजना से है इस दृष्टि से नाटक में पात्रों की संख्या न केवल पर्याप्त या उचित होनी चाहिए अपितु आनुपातिक महत्व का ध्यान भी रखा जाना चाहिए, पात्र वर्गश्रेणी भी उचित होनी चाहिए। इस दृष्टि से 'आषाढ़ का एकदिन' नाटक बेहद सफल है इसमें पात्र न केवल कम है अपितु आनुपातिक महत्व का भी ध्यान रखा गया है।

शब्द तत्व के अंतर्गत संवाद योजना तो आती ही है अपितु इससे महत्वपूर्ण तो वह नाट्य भाषा होती है जो बिना शब्दों के प्रभाव डालती है - आंगिक एवं और आंगिक संप्रेषण द्वारा। इस दृष्टि से आषाढ़ का एकदिन बेहद सफल रहा क्योंकि इसमें दोनों का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही जबरदस्त प्रयोग किया गया।

आषाढ़ का एकदिन नाटक बाक्स सेट थियेटर पर खेला ही जाता रहा ओपन एयर थियेटर पर भी खेलने में कोई समस्या नहीं आती।

वास्तव में मोहन राकेश हिंदी नाटकों के लिए एक रंगमंच की स्थापना करना चाहते थे जिसमें वह खोजे सफल प्रतीत होते हैं।

11½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

'मैला आंचल' फणीश्वरनाथ रेणु का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है यह अभी तक आंचलिक उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है इसकी इस सफलता के पीछे संवेदनागत विशेषताएं तो रही हीं उससे बड़ी भूमिका इसकी भाषा-शैली ने निभाई।

मैला आंचल की भाषा की मुख्य विशेषता इसके देशज शब्दों में दिखायी पड़ती है जैसे –
~~मैंा~~ गमकौआ, फुलर, गमगम

'कमली जब गमकौआ साबुन से नहाती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है।'

इसके अतिरिक्त विदेशज शब्दों का स्थानीय भाषा में रूपान्तरण भी बड़ी कुशलता से किया है –

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

फाइरम (फार्म), रायबरेली (राइब्रेली)

यदि भाषा देशज एवं तद्भव है परन्तु डा० प्रशांत या लेखक के अपने विचारों में तत्समता रहती है – भौतिचार, सोपसवाद आदि।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रभाव भाषा को सहज एवं लोकजीवन के नजदीक लाता है इनका प्रयोग बड़ी मात्रा में किया गया है जैसे – जोरू जमीन जोर का नहीं तो किसी और का।

सूत्र भाषा का प्रयोग भी किया गया है जहां कोई जटिल बात कम शब्दों में कहना हो वहां पर यह भाषा बड़ी उपयोगी रही है।

इस उपन्यास की एक विशेषता अन्तरपाठ्यता भी है जिसमें अन्य रचनाओं के प्रसिद्ध रूपों को इसमें शामिल किया गया है जैसे –

"पंछी करे न चाकरी अजगर करे न काम
दास मलूका कह गये सबके दाताराम।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

चेतना प्रवाह शैली का भी प्रयोग किया गया है विशेषता जहाँ पर कमली डा. प्रशांत के बारे में सोचती है - "डाउ सच-सच बताना तुम यहाँ क्यों आये, तुम न आते तो मैं मर जाती - - ---- - कहो हैं मीठी दवा येह इंजा तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है।"

इस प्रकार भाषा-शैली की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास है जो इसकी प्रसिद्धि का आधार भी है।

9/15 Good

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या उपन्यास यशपाल द्वारा रचित एक प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में वैसे तो नायिका दिव्या की कथा ही कही गई है परन्तु इसके साथ-साथ कई अन्य बातों पर टिप्पणी भी की गई हैं।

दिव्या का महत्व नारी चेतना, वर्ण व्यवस्था पर चोट, दास व्यवस्था पर चोट, मानववादी विचार, भाषा-शैली, चरित्र आदि को लेकर हैं।

यशपाल इस नाटक का समर्पण नारी को ही करते हैं —

"तुमको ------
निरन्तर पराभव और अभिशाप सहकर भी
जिसका जीवन दीप स्नेह से प्रज्वलित है।"

इसमें नारी एवं पुरुष दोनों को अंत में एक-दूसरे का आश्रय बताकर उसके महत्व की स्थापना की गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णव्यवस्था किस प्रकार जाति भेद के साथ लिंगभेद को जन्म देती है इसे भी बताया है कि कुलमाता, कुलनारी, कुलवधू के सम्मान स्त्री को उसकी स्वतंत्रता की कीमत पर मिलते है।

दास व्यवस्था की तो बड़ी मार्मिक व्यंजना की है –

'वे (दासियां) प्रति अट्ठारह माह पश्चात संतान को जन्म देती थी प्रभुसत्ता उन्हें न बेचकर उनकी संतान को बेचा करता था।'

इसी प्रकार जब पुष्पसेन उच्च योद्धा का दर्जा हासिल कर लेता है तो भी उसे निम्नवर्ण का होने के कारण दिव्या की शिविका उठाने का अधिकार नहीं है।

इसी तरह मानव मात्र तत्वों से पूर्ण ओत-प्रोत है तथा मनुष्य एवं परिवर्तन को स्वीकार करता है – 'मनुष्य भोक्ता नहीं कर्ता है'।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी के साथ इसकी भाषा-शैली जो ऐतिहासिक वातावरण का सृजन करने में सहायक रही है उसने भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अतः कहा जा सकता है कि उपन्यास की प्रसिद्धि, महत्व एवं प्रासंगिकता यदि आज तक बनी है तो उपर्युक्त कारणों की वजह से ही संभव हो पाया है।

End

9/11

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation